छत्तीसगढ़ शासन

संस्कृति विभाग

# वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन

# 2006-2007

रायपुर 2007

# संस्कृति विभाग

| | |
|---|---|
| विभाग का नाम | संस्कृति विभाग |
| मंत्री | श्री वृजमोहन अग्रवाल |
| प्रमुख सचिव | श्री टी. राधाकृष्णन |
| अपर सचिव | श्री टी.सी. महावर |

## विभागाध्यक्ष

| | |
|---|---|
| आयुक्त संस्कृति एवं पुरातत्व | श्री टी. राधाकृष्णन |

# विभाग के उद्देश्य

राज्य में कोई औपचारिक या विशेष नीति के स्थान पर राज्य की परम्पराओं-मान्यताओं का समावेश एवं उनके पोषण-सवंर्धन के लिए सांस्कृतिक उद्देश्यों की परिकल्पना पर वल देते हुए राज्य की सांस्कृतिक गतिविधियों को नया आयाम दिया जा रहा है। जिसके अंतर्गत राज्य, अभिलेखीय एवं गैर अभिलेखीय परंपराओं के आधार पर संस्कृति को परिभाषित करेगा। राज्य, समुदायों के पारस्परिक संवन्धां को वनाये रखने एवं उनके मध्य समन्वय स्थापित करने का प्रयास करेगा, इसके अतिरिक्त सीमावर्ती पडोसी राज्यों के छत्तीसगढ़ राज्य के साथ सांस्कृतिक संवन्धां की नये परिप्रेक्ष्य में व्याख्या की जायेगी।

राज्य की बोलियों को प्रोत्साहित किया जावेगा। देश एवं विश्व की दूसरी वोलियों, समुदायों के मध्य संवन्धां को प्रोत्साहित किया जायेगा। संस्कृति के ज्ञान का संचयन एवं उसका उपयोग समग्र रूप से एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखा जायेगा। राज्य में सांस्कृतिक गतिविधियों को वढ़ावा देने एवं फैली हुई विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं को एक सूत्र में बांधने हेतु एक अंतरसंकायी समिति का निर्माण किया जायेगा, जिसमें विभिन्न कलाओं एवं संकायों के उच्च स्तरीय विशेषज्ञों का समावेश होगा। प्रदेश की आदिम संस्कृति के संरक्षकों और वाहक कलाकारों को दूरस्थ अंचलों से चिन्हांकित करने के परिणाममूलक प्रयास किए जाएंगे।

स्मारकों का संरक्षण संस्कृति नीति का विशिष्ट अंग होगा। राज्य को एक जीवंत संग्रहालय की नई परिकल्पना में रख कर विभिन्न समुदायों की संस्कृति का नये रूप में प्रस्तुतिकरण, नीति का एक प्रमुख भाग होगा। इसके अतिरिक्त समुदायों के जैविक- सांस्कृतिक तत्व तथा उनके मध्य परिवेशीय अंतरसंबन्धो को नया आयाम देते हुये यह प्रयास किया जावेगा। संस्कृति को संपूर्ण जीवन का आवश्यक अंग मानकर उसका संवर्धन एवं परिवर्धन क्षेत्रीय कार्यक्रम, शोध-संगोष्ठी एवं विभिन्न उत्सवों के माध्यम से करना विभाग का ध्येय है।

# क्रियाकलाप

संस्कृति विभाग का कार्य प्रदेश की संस्कृति, साहित्य एवं पुरातत्व का संवर्धन करना है तथा उसके उत्तरोत्तर विकास के लिये कार्य करते रहना है। विभाग के क्रियाकलाप मुख्यतः निम्नानुसार है-

- संस्कृति से संबंधित नीतिगत मामले व नीति निर्धारण कार्य।
- साहित्य एवं कला का विकास।
- सांस्कृतिक परम्परा का संरक्षण।
- ललित कला तथा लोक कला को प्रोत्साहन।
- छत्तीसगढ़ राज्य की कला, संस्कृति, परम्पराओं एवं जनभाषाओं का संरक्षण, संवर्धन, प्रोत्साहन एवं देश विदेश में उसका प्रचार-प्रसार।
- अर्थाभावग्रस्त कलाकारों/साहित्यकारों को पेंशन व आर्थिक सहायता।
- अशासकीय सांस्कृतिक संस्थाओं को प्रोत्साहन व आर्थिक सहायता।
- चयनित कलाकारों/साहित्यकारों/विद्वानों को सम्मानित करने का कार्य।
- कला, संस्कृति एवं ऐतिहासिक विषयों के दुर्लभ एवं प्रामाणिक ग्रंथों, दस्तावेजों, स्मृति चिन्हों का संग्रह, प्रकाशन, प्रदर्शन तथा संवधित व्याख्यान, संगोष्ठियों आदि का आयोजन।
- पुराने अभिलेखों का संरक्षण, संवर्धन।
- ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों का संरक्षण तथा संग्रहालयों का विकास।
- ऐतिहासिक स्मारकों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना।
- सिनेमा अधिनियम के तहत नये सिनेमागृहों को लायसेंस।
- शासकीय कार्य में हिन्दी भाषा का प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य।
- शैक्षणिक संस्थाओं में हिन्दी भाषा का प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य।

# विभाग की प्रमुख उपलब्धियां

1. पुरखौती मुक्तांगन संकल्पना - राज्य की संस्कृति, परंपरा, पुरातत्व, पर्यावरण और जीव-सृष्टि की सन्निधि में विकास की कल्पना को साकार करने हेतु पुरखौती मुक्तांगन का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ और राज्य के पारंपरिक शिल्पियों के द्वारा इसे सांस्कृतिक धरोहर के रूप में आकार प्रदान करने का संकल्प जीवन्त हुआ। पुरखौती मुक्तांगन रायपुर से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर ग्राम-उपरवारा में लगभग 200 एकड़ भूमि पर आकार ग्रहण कर रहा है। निर्माणाधीन परिसर में पारम्परिक आदिवासी शिल्प जैसे- कोण्डागांव का लौह शिल्प, नारायणपुर वस्तर का काष्ठ शिल्प, एकताल, रायगढ़ एवं कोण्डागांव का ढोकरा शिल्प, सरगुजा का रजवार शिल्प आदि से पुरखौती मुक्तांगन अलंकृत व विकसित किया जा रहा है। महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा 7 नवम्बर 2006 को पुरखौती मुक्तांगन के प्रथम चरण का लोकार्पण किया गया, लोकार्पण समारोह में महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने निर्माणाधीन इस योजना की सराहना की। इससे पूर्व 1 अगस्त 2006 को माननीय मुख्यमंत्रीजी के हाथों सल्फी पौधों का रोपण कर शिल्प ग्राम निर्माण का संकल्प लिया गया। इस योजना के निर्माण कार्य हेतु ग्रामीण अभियांत्रिकी विभाग, अभनपुर एवं वन विभाग को एजेन्सी के रूप में दायित्व सौंपा गया है।

2. 'छत्तीसगढ़ बहुआयामी संस्कृति संस्थान' - राज्य के विविध सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रदर्शन, विकास, प्रचार-प्रसार, संकलन, कार्यशाला आदि के प्रत्यक्ष आयोजन से संबंधित संस्थान के विकास हेतु छत्तीसगढ़ बहुआयामी सांस्कृतिक संस्थान के गठन का निर्णय लिया गया। जिसमें ख्याति प्राप्त साहित्यकारों की एक अंतःसंकायी समिति होगी। साथ ही विविध कलाओं एवं संकायों से चयनित उच्चस्तरीय विशेषज्ञ सम्मिलित होंगे। यह केन्द्र समुदायों के विशिष्ट सांस्कृतिक क्रियाकलापों को सर्वत्र प्रोत्साहित करेगा। इस योजना को साकार करने के उद्देश्य से आडिटोरियम, मुक्ताकाश मंच, आर्ट गैलरी आदि तैयार किया जाना है। 'बहुआयामी संस्कृति संस्थान' के निर्माण हेतु राजधानी के मध्य पंडरी में 4.8 एकड़ भूमि उपलब्ध हो चुकी है। इस सांस्कृतिक परिसर के निर्माण हेतु देशभर के अनुभवी वास्तुविदों से प्राप्त प्रस्तावों पर क्रियान्वन करने का प्रयास किया जा रहा है।

3. कलाकारों की पहचान 'चिन्हारी' - राज्य के सुदूर अंचलों के लोक कलाकारों की पहचान करने, उनका सम्मान करने एवं यथासंभव उन्हें प्रस्तुति का मौका प्रदान करने के उद्देश्य से संस्कृति विभाग द्वारा दूरदराज के अंचलों में लोक कलाकारों का सर्वेक्षण एवं सूचीवद्ध कर सम्मान पत्र भेंट करने की अभिनव योजना 'चिन्हारी' आरंभ की गई है। विभाग द्वारा राज्य की लोक कलाओं विशेषकर-लुप्त होने की कगार पर खड़ी लोक कलाओं के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से विभिन्न लोक कलाओं की प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है, जिसमें कि विभिन्न कलाओं के अभिलेखन का कार्य भी किया जाएगा।

4. लोकोत्सव व पारंपरिक मेलों का विकास - राज्य के एक मात्र प्रयाग राजिम जहाँ प्रतिवर्ष मागपूर्णिमा को पारंपरिक रूप से वृहद मेले का आयोजन होता था। उसे नियमित स्वरूप प्रदान करने और विधिगत मान्यता प्रदान करने हेतु राजिम कुंभ मेला समिति गठित किये जाने हेतु समुचित अधिनियम वनाया गया है। राज्य के संस्कृति के प्रचार एवं पर्यटन को वढ़ावा देने की दृष्टि से राजिम में मठाधीशों, संत-महात्माओं को आमंत्रित कर संत समागम का आयोजन कर इसे कुंभ का स्वरूप दिया जा रहा है। इसी तरह राज्य के अन्य क्षेत्रों जैसे- वस्तर दशहरा, शिवरीनारायण उत्सव, रायगढ़ में चक्रधर समारोह, सरगुजा में रामगढ़ उत्सव, बिलासपुर में बिलासा उत्सव, जांजगीर में जाज्वल्वदेव महोत्सव, सिरपुर में सिरपुर उत्सव, लोक डोंगरगढ़ मड़ई, भोरमदेव महोत्सव, ताला- उत्सव आदि के आयोजन जिला प्रशासन व अन्य माध्यम से समन्वय कर संचालित किये जाते हैं।

5. राज्योत्सव का आयोजन- राज्य स्थापना दिवस 1 नवम्वर के अवसर पर राज्य के विभिन्न

राज्योत्सव 2006 उद्घाटन समारोह

अंचलों में कलाकारों को प्रस्तुति हेतु अवसर उपलब्ध कराने, नये कलाकारों की पहचान, प्रोत्साहन एवं रचनात्मक स्वरूप प्रदान करने हेतु राज्य के जिलों में जिला प्रशासन के माध्यम से तीन दिवसीय राज्योत्सव का आयोजन किया गया।

इस वर्ष राज्योत्सव के सात दिवसीय मुख्य समारोह में प्रदेश के लोक कलाकारों के साथ-साथ शेष भारत के लगभग दस राज्यों के प्रतिष्ठित कलाकारों के द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई।

6. बाल फिल्म महोत्सव का आयोजन - प्रदेश में पहली बार बच्चों के शैक्षणिक एवं स्वस्थ मनोरंजन को ध्यान में रखते हुए बाल फिल्म समारोह का आयोजन दो चरणों में 11-17 सितम्बर 2006 तथा 1-6 नवम्बर 2006 तक फिल्मों का प्रदर्शन कर किया गया। राज्य में कुल 38 फिल्मों का पांच सौ प्रदर्शन का लक्ष्य रखा गया था, इस दौरान कुल 38 प्रकार के बाल फिल्मों का 1200 से अधिक प्रदर्शन किया गया जिसका आनंद प्रदेश के लगभग 2.00 लाख बच्चों ने लिया।

7. वन्दे मातरम् शताब्दी समारोह का आयोजन-

आजादी की लड़ाई में प्राण डाल देने क्रांतिकारी गीत जो युवाओं में शक्ति का संचार कर आजादी के लड़ाई के लिये प्रेरणा प्रदान करते थे। इस गीत के सुनने मात्र से सभी में उमंग जागृत होती थी। ऐसे राष्ट्रगीत के सम्मान एवं शताब्दी समारोह पर विभाग द्वारा राष्ट्र को गौरव एवं

गरिमा के अनरूप वन्दे मातरम् शताब्दी समारोह का आयोजन 7 सितम्बर 2006 को किया गया था। इस आयोजन के दौरान विशाल रैली, संगोष्ठी, चित्रकला प्रतियोगिता के साथ-साथ प्रदेश के समस्त स्वतंत्रा संग्राम सेनानियों को आमंत्रित कर अभिनंदन किया गया था।

8. पूज्य गुरू घासीदास जी की 250 वीं वर्षगांठ - 18 दिसम्बर 2006 से 31 दिसम्बर 2006 तक पूज्य गुरू घासीदास जी की 250 वीं वर्षगांठ पर राज्यस्तरीय लोक महोत्सव एवं पंथी नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन

किया गया। इस दौरान समाज के राजमंहतो, प्रतिष्ठित नागरिकों एवं जन प्रतिनिधियों का अभिनंदन किया गया। आदिम जाति कल्याण विभाग के सहयोग से आयोजित इस समारोह में विजयी पंथी नृत्य दलों को पुरस्कृत एवं जैतखम्भ प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

9. कला का प्रचार-प्रसार - कलाकारों को प्रोत्साहित करने एवं कला के प्रचार-प्रसार हेतु पूरे वर्ष विभिन्न आयोजन जैसे स्वतंत्रता दिवस समारोह, शास्त्रीय संगीत समारोह, अखिल भारतीय संगीत समारोह, राज्योत्सव, गणतंत्र दिवस समारोह आदि का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय भावना एवं युवाओं में जनभावना विकसित करने की दृष्टि से 'इदं न मम' दो अंकी भावनाट्य का आयोजन किया गया। इसी प्रकार सरस मेला, स्वदेशी मेला, जगार आदि आयोजनों में भी सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ की गई थी। राज्य की वैभवशाली कला के प्रचार-प्रसार हेतु लोक कलाकारों को राज्य के वाहर प्रस्तुति के अवसर देने के विशेष प्रयासों के तहत उड़ीसा, झारखंड, उत्तरांचल, विहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश उत्तरप्रदेश आदि राज्यों में लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुति दी गई।

10. राज्य में सांस्कृतिक केन्द्रों का विकास - रायपुर सहित राज्य के सांस्कृतिक दृष्टि से अन्य प्रमुख नगरों अंविकापुर, जगदलपुर एवं विलासपुर में पुरातत्वीय संग्रहालय के विकास के साथ-साथ इनकों सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना है। इन केन्द्रों में आंचलिक साहित्य पुस्तकालय, क्षेत्र की लोक कला के अभिलेखन एवं उससे संबंधित म्यूजिक लाईब्रेरी, लोक शैली व लोक परंपराओं पर आधारित संग्रहालय वनाया जाएगा। साथ ही इन केन्द्रों के माध्यम से वर्ष भर सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित की जाएगी।

11. उपलब्धियां -

- सिरपुर उत्खनन व विकास - राष्ट्रीय स्तर के पुरातत्वीय स्थल सिरपुर के समग्र विकास के लिए टास्क फोर्स का गठन किया गया एवं योजना तैयार कर विभिन्न विभागों के समन्वय से इस महत्वपूर्ण पुरातत्वीय धरोहर को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने हेतु कार्य करवाये जा रहे हैं। सिरपुर में वृहतकाय सुरंग टीला के नाम से ज्ञात परिसर में ईंटों से निर्मित प्राचीन दो गर्भगृहों से युक्त ईंटों से निर्मित मंदिर के अवशेष एवं आवासीय परिसर को पूर्ण रूपेण अनावृत्त कर अनुरक्षण और संरक्षण का कार्य तकनीकी ढंग से पुरातत्व विशेषज्ञ एवं उत्खनन निर्देशक के मार्गदर्शन में किया जा रहा है। इसी क्रम में स्वस्तिक विहार के सन्निकट स्थित अन्य चार प्राचीन ध्वस्त स्मारक स्थल की संरचना को प्रकाश में लाया गया है। सिरपुर से उत्खनन से प्राप्त प्रतिमाओं तथा पुरावशेषों के प्रदर्शन हेतु संग्रहालय निर्माण की कार्यवाही की जा रही है। सिरपुर को विश्व धरोहर के मानचित्र पर लाने के लिए विभाग कृत संकल्प है।

- धरोहरों की सुरक्षा एवं संरक्षण - राज्य में फैले पुरातत्वीय धरोहर की सुरक्षा के लिए 68 चौकीदारों के अतिरिक्त पदों की स्वीकृति प्राप्त की गई है। इसके साथ ही प्रशासन, पुलिस, पंचायत तथा जन सहयोग से स्मारक व पुरावशेषों की सुरक्षा हेतु मजबूत कदम उठाए गए हैं।

मावली माता मंदिर तरपोंगा रायपुर, शिव मंदिर गिरोद रायपुर, चितावरी देवी मंदिर धोबनी रायपुर, लक्ष्मणेश्वर मंदिर खरोद जांजगीर-चांपा, ढोढरेपाल जिला बस्तर का अनुरक्षण कार्य कराया गया। इसी प्रकार मड़वा महल, कवर्धा, चितावरी देवी मंदिर धोबनी रायपुर, शिव मंदिर

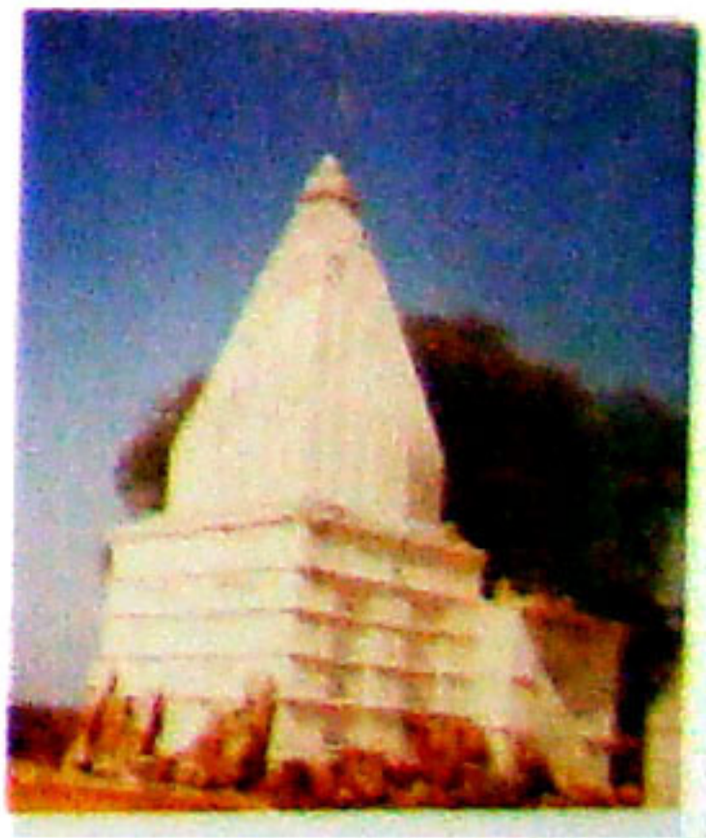

मावली माता मंदिर तरपोंगा रायपुर

सहसपुर दुर्ग, महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर में प्रदर्शित पाषाण स्तंभों एवं अन्य अवशेषों की सुरक्षा के लिए रसायनीक संरक्षण कार्य करवाया गया है।

महत्वपूर्ण संरक्षित पुरातत्वीय स्मारकों के परिसर का उन्नयन एवं विकास कार्य तथा स्मारकों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने का कार्य पर भी ध्यान केन्द्रित की गई है। राज्य के पुरातत्वीय स्मारकों जैसे - भोरमदेव, मड़वा महल, बालोद, ताला, सिरपुर, बारसूर का वत्तीसा मंदिर, डीपाडीह आदि के संरक्षण एवं विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ राज्य की वैभवशाली पुरासम्पदा के संरक्षण, प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण जिलों में पुरातत्वीय संग्रहालय स्थापित करने के लिए राजनांदगांव, जांजगीर-चांपा, महासमुन्द, कांकेर, सरगुजा, रायगढ़, कोरिया, विलासपुर कलेक्टरों सहित खैरागढ़ विश्वविद्यालय को संग्रहालय के विकास के लिए राशि आवंटित की गई है। राजनांदगांव संग्रहालय में प्रदर्शन एवं उन्नयन हेतु केन्द्र से अनुदान प्राप्त हुई है।

रूद्र शिव, ताला

12. गोष्ठियां -

राज्य की कला, संस्कृति, परंपरा, वैभवशाली धरोहरों, साहित्यकारों एवं महापुरूषों पर आधारित गोष्ठियो, स्मृति व्याख्यानों तथा साहित्यिक वैचारिक गोष्ठियो का आयोजन विभाग के साथ-साथ विभाग के अंतर्गत स्थापित पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजनपीठ तथा सांस्कृतिक संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान कर आयोजित किया गया। इस वर्ष विशेष रूप से हिन्दी दिवस, वन्दे मातरम् एवं स्वतंत्रता संग्राम, गुरू घासीदास जी की 250 वीं वर्षगांठ एवं गांधी जयंती के अवसर पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्व धरोहर दिवस एवं संग्रहालय दिवस पर विचार गोष्ठी एवं समारोह का आयोजन किया गया।

13. अनुदान - विभाग द्वारा समय-समय पर सांस्कृतिक/साहित्यिक/सामाजिक संस्थाओं/व्यक्तियों को विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक, पुरातत्वीय गतिविधियों एवं प्रकाशन हेतु अनुदान देकर उत्प्रेरक की भूमिका का निर्वाह किया गया। इस वर्ष छत्तीसगढ़ अंचल के लोक पारंपरिक आयोजनों एवं उत्सवों, साहित्यिक आयोजनों, संगोष्ठियों हेतु विभिन्न अशासकीय संस्थाओं को अनुदान राशि रू. 18,99,500/- विभागीय योजनान्तर्गत कुल 38 ख्यातिप्राप्त अर्थाभावग्रस्त साहित्यकारों / कलाकारों को मासिक आर्थिक सहायता राशि रू. 3,19,200/- तथा साहित्यकार एवं कलाकार की लम्बी

बीमारी दुर्घटना या दैवी विपत्ति में तत्काल सहायता देने के उद्देश्य से कलाकार कल्याण कोष से कुल 23 हितग्राहियों को राशि रू. 1,15,000/- मात्र प्रदान किया गया है।

सांस्कृतिक कला परंपरा के प्रदर्शन, संरक्षण व प्रोत्साहन के लिए राज्य में लगने वाले पारंपरिक मेलां को प्रोत्साहित करने, राज्य की वैभवशाली लोककला को संरक्षण एवं लोक कलाकारों को "चिन्हारी योजना" के अन्तर्गत पहचान प्रदानकर प्रदर्शन हेतु अधिक से अधिक मौके उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संस्कृति विभाग द्वारा जिला प्रशासन के माध्यम से निम्नांकित प्रमुख उत्सव एवं महोत्सव आयोजित किए गए -

⇒ खल्लारी महोत्सव, महासमुन्द

⇒रामगढ़ महोत्सव, सरगुजा

⇒चक्रधर समारोह, रायगढ़

⇒बिलासा महोत्सव, बिलासपुर

⇒कबीर पंथी मेला दामाखेड़ा, रायपुर

⇒जाजल्यदेव लोक महोत्सव, जांजगीर-चांपा

⇒कांकेर गढ़िया महोत्सव, कांकेर

विश्व की प्रथम रंगशाला रामगढ़ (सरगुजा)

14. प्रकाशन - स्वतंत्रता दिवस, राष्ट्रीय रंग समारोह, शास्त्रीय संगीत समारोह सबंधी ब्रोशर, गणतंत्र दिवस समारोह पुस्तिका, नृत्य संगम, राज्य अलंकरण दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ राज्य प्रेरक विभूतियां व सम्मान ग्रहिताओं संबंधी पुस्तिका,

राज्योत्सव सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं राज्य दिवस सांस्कृतिक कार्यक्रमों के ब्रोशर, गुरू घासीदास जी की 250 वीं वर्षगांठ पर विविध पत्रिकाएवं ब्रोशर का प्रकाशन किया गया। छत्तीसगढ़ : संस्कृति एवं पुरातत्व तथा कलातीर्थ भोरमदेव, ताला के रूद्र शिव पर आधारित ब्रोशर, विभागीय पत्रिका बिहनिया का प्रकाशन किया गया।

15. सांस्कृतिक पंचांग का प्रकाशन - प्रदेश की गौरव शाली परंपरा और सांस्कृतिक गतिविधियों को समय-सूत्र में माले की तरह अलंकृत करने का प्रथम प्रयास किया गया। सांस्कृतिक पंचांग का प्रकाशन दो अलग-अलग आकार में किया गया जिसका लोकार्पण एवं विमोचन गणतंत्र दिवस पर महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा, माननीय मुख्यमंत्री जी एवं माननीय संस्कृति मंत्री जी की उपस्थिति में किया गया।

16. पुस्तकालय - संस्कृति विभाग के अंतर्गत संचालित महंत सर्वेश्वरदास पुस्तकालय को राज्य स्तरीय ग्रंथालय का दर्जा दिया गया है। साथ ही इसे ई-लाईब्रेरी के रूप में विकसित किया जा रहा है। 11वें वित्त आयोग के अंतर्गत प्राप्त राशि से इस ग्रंथालय के विकास हेतु रू. 50.00 लाख की कारपस निधी बनाई गयी है। इस पुस्तकालय के समग्र विकास एवं पाठकों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए इसे शहीद स्मारक भवन, रजबंधा मैदान में प्रतिस्थापित किया गया।

## कला एवं संस्कृति

प्रदेश की संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण व संवर्धन हेतु विभागीय नीति के अनुरूप कार्यक्रम तैयार कर गतिविधियों का संचालन विभाग द्वारा किया जाता है, जिससे समुदायों के बीच पारंपरिक संबन्धों को बनाये रखने में, उन्हें विकसित करने में, उनके जीवन, उनकी कलाओं को उत्प्रेरित किया जा सके। स्थानीय समुदायों की अबाध सांस्कृतिक परम्पराओं की पहचान, मान्यता देना, पुनर्जीवित करना, दस्तावेजीकरण, प्रस्तुति एवं उनका प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। साथ ही छत्तीसगढ़ के अद्वितीय सांस्कृतिक वैविध्य एवं विशिष्ट पहचान को परिभाषित कर, उसके सीमावर्ती पड़ोसी राज्यों तथा सांस्कृतिक प्रदेशों के साथ संबंध व विनिमय स्थापित किया जा रहा है। राज्य की समृद्ध जनजातीय परंपरा के संरक्षण एवं परिवर्धन हेतु विभिन्न कार्यक्रम, जिसमें जनजातीय रहन-सहन, तौर तरीके,

रीति-रिवाज, लोक नृत्य, गायन एवं अन्य परंपराओं को वनाये रखने हेतु भी कार्य किया गया है। इस हेतु विभागीय क्रियाकलाप के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में कार्यरत स्वायत्तशासी एवं निजी क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं को आर्थिक सहायता दी गई है। राजभाषा एवं संस्कृति के अन्तर्गत सहयोगी गतिविधियों हेतु 'पदुमलाल पुन्नालाल वख्शी सृजन पीठ' द्वारा इस वर्ष पदुमलाल पुन्नालाल वख्शी अवसर पर विशेष संगोष्ठि का आयोजन राजनांदगांव/कोरवा में किया गया।

प्रदेश में इस वर्ष छत्तीसगढ़ सिंधी साहित्य संस्थान का गठन किया गया और राज्योत्सव पर संस्थान द्वारा पृथक से प्रदर्शनी का आयोजन कर संतो का उद्देश्य आम जनता तक पहुंचाने में सफलता प्राप्त की गयी थी।

## आयोजन एवं उत्सव

राज्य, नयी संस्थाओं/उत्सवों को प्रस्थापित करने के वजाय अस्तित्वमान पृष्ठभूमि वाले उत्सवों/संस्थाओं को प्रोत्साहित करता है, ताकि राज्य की पारंपरिक संस्कृति अविच्छिन्न वनी रहे और समाज-संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में अंतःसंकायी संवाद कायम रहे। इस तारतम्य में विभाग द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गए/सहयोग प्रदान किया गया -

- महामहिम राष्ट्रपति महोदय क रायपुर प्रवास के दौरान राजभवन में लोक कलाकार दल द्वारा महामहिम राष्ट्रपति महोदय का पारंपरिक स्वागत के साथ-साथ मोहरी वादन (छत्तीसगढ़ का लोक वाद) प्रस्तुत किया गया सुन्दरकेरा अभनपुर में महामहिम राष्ट्रपति महोदय के आगमन पर लोकरंग, माता जगराता एवं स्थानीय लोक कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई। (नवम्बर 2006)

- महामहिम उपराष्ट्रपति महोदय क रायपुर प्रवास के दौरान राजभवन में सांस्कृतिक कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ का लोकरंग अर्जुन्दा द्वारा प्रस्तुत किया गया। (अक्टूबर 2006)

- गोवा के महामहिम राज्यपाल,के आगमन पर छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों के दल द्वारा सरहुल नृत्य, राऊत नाचा प्रस्तुति किया गया। (नवम्बर 2006)

- रायपुर एवं बिलासपुर में आकार-2006 का आयोजन किया गया। विलासपुर में पहली बार आठ दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया था। आकार-2006 के समापन अवसर पर शिल्प गुरूओं का सम्मान एवं शिविर में प्रशिक्षित सदस्यों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। कुछ चयनित प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अपनी योग्यता एवं क्षमता का प्रदर्शन किया गया। इस संदर्भ में एक दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। (मई 2006)

- संसदीय समिति (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति) के छत्तीसगढ़ आगमन पर परम्परागत सांस्कृतिक एवं अपने लोककला से परिचय कराने हेतु पंडवानी, पंथी नृत्य एवं लोकरंग अनुंदा का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

- स्वाधीनता दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक संध्या में देशभक्ति से ओतप्रोत पारंपरिक लोक नृत्य-गीत वन्दे मातरम्, एवं मुम्बई के ख्याति प्राप्त कलाकार प्रख्यात पं. भवानी शंकर पखावज वादक, श्री राकेश चौरसिया प्रसिद्ध बांसुरी वादक तथा लोकप्रीय गायक श्री प्रदीप कुमार व सुश्री सुप्रिया अधिकारी द्वारा गायन प्रस्तुत किया गया। (अगस्त 2006)

- संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली के सहयोग से चार दिवसीय 'संगीत प्रतिभा उत्सव' का आयोजन किया गया जिसमें छत्तीसगढ़ के चुने हुये कलाकारों के साथ-साथ श्री साहब आलम, श्री रमाशंकर, सुश्री श्रुती अधिकारी, श्री समीर खां, श्री हरिशचन्द्र, श्री राजारंजन, श्री एस. अरविंद, श्री ओंकार दोदेकर, श्री गणेश प्रसाद आदि देश के प्रख्यात युवा कलाकारों द्वारा शास्त्रीय गायन एवं वादन प्रस्तुत किया गया। (अगस्त 2006)

- छत्तीसगढ़ विधान सभा में सुप्रासिद्ध गायिका अनुराधा पौड़वाल के द्वारा सुगम संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। (अप्रेल 2006)

- रायपुर में आयोजित 'जगार' में राज्य के लोक कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुति किया जा रहा है। (फरवरी 2007)

- राजधानी में राज्य स्थापना की छठवीं वर्षगांठ के अवसर पर सात-दिवसीय राज्योत्सव में अलंकरण समारोह व राज्य की पारंपरिक नृत्य-गीत पंथी नृत्य, सुवा, परब, करमा नृत्य, चंदैनी गोंदा, राउत नाच के साथ-साथ आमंत्रित गुजरात राज्य की कला एवं सांस्कृतिक वैभव की झलक, पंजाबी गायन-नृत्य, राष्ट्रीय भावना विकसित करने नागालैण्ड के कलाकारों द्वारा नागा नृत्य-व असम के लोक नृत्य, अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, बच्चों का सांस्कृतिक प्रस्तुति-लिटिल चैंप के विजयी बाल कलाकारों द्वारा गायन, अग्निहोत्री बंधु लखनऊ द्वारा भजन गायन, सुश्री सुमीता शर्मा नई दिल्ली द्वारा कत्थक, सुश्री अरूणा मोहंती भुवनेश्वर द्वारा ओडीसी बेले, श्री राजेन्द्र जैन मुम्बई द्वारा नृत्य-संगीत-भजन, अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, ज़मीर हुसैन खां भोपाल का गायन, अली-गनी मुम्बई का सूफी गायन, अभिजीत भट्टाचार्य मुम्बई का गायन, पद्मश्री गुलाबो बाई राजस्थान के द्वारा लोकसंगीत एवं सुश्री हेमामालिनी द्वारा नृत्य नाटिका महालक्ष्मी का प्रदर्शन किया गया। इसके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ के अन्य युवा कलाकारों की सांगीतिक प्रस्तुति कराई गई। साथ ही सभी अन्य 15 जिलों में जिला प्रशासन के माध्यम से तीन दिवसीय राज्योत्सव का आयोजन कराया गया। (नवम्बर 2006)

- रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के गवर्नर एवं प्रबंध समिति/उद्योगपति के आगमन पर राज्य की सांस्कृतिक कला परंपरा को प्रदर्शित करने वाली प्रस्तुतियां लोकरंग, पंडवानी गायन, पंथी नृत्य, का प्रस्तुतिकरण किया गया। (अक्टूबर 2006)

- छत्तीसगढ़ राज्य दिवस पर लाल चौक थियेटर, नई दिल्ली में सांस्कृतिक कार्यक्रम में भजन गायन, पारंपरिक पंथी नृत्य, करमा नृत्य एवं राजा फोकलवा नाटक का प्रस्तुतिकरण किया गया। (नवम्बर 2006)

- 'आई.टी.सी., संगीत रिसर्च अकादमी, कोलकाता' के सहयोग से आयोजित "तीन-दिवसीय शास्त्रीय संगीत समारोह" में गायन श्री संदीप भट्टाचार्य, संतुर वादन श्री सतीस व्यास, सरोद वादक श्री आलम खां, गायन सुश्री श्रुति सादोलिकर, श्री मसकुर अली खां, द्वारा संगीतमयी कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। साथ ही प्रशिक्षण कार्यशाला भी आयोजित की गई। (दिसम्बर 2006)

- 'स्वदेशी मेला' में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में वन्देमातरम, बारामासी नृत्य, सिद्धी गोमा, करमा नृत्य, लोकरंग अर्जुन्दा द्वारा आजाद नृत्य नाटिका, पंथी नृत्य, पंडवानी, छत्तीसगढ़ी लिटिल चैंप, ककसार बस्तरिहा नृत्य, शैला नृत्य, सोनहा धान लोक नृत्य, गायन, छत्तीसगढ़ महतारी, गेड़ी नृत्य, भरथरी, भजन गायन, लोकमंच एवं चंदैनी गोंदा की प्रस्तुति दी गई। (अक्टूबर एवं दिसम्बर 2006)

- 'गणतंत्र दिवस' के अवसर पर विभिन्न विभागों की झांकियों का समन्वय तथा राजधानी के मुख्य कार्यक्रम में लोक नर्तक दलों द्वारा गौर, राउत एवं पंथी नृत्य की प्रस्तुति तथा सांस्कृतिक संध्या में छत्तीसगढ़ी पारंपरिक नृत्य-गीत और देशभक्ति का समन्वित कार्यक्रम एवं प्रसिद्ध संगीतकार व गायक द्वारा देशभक्ति व सुगम संगीत पर आधारित प्रस्तुति दी गई। (जनवरी 2007)

विभाग द्वारा सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने एवं छत्तीसगढ़ की कला एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से निम्नलिखित राज्यों में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई -

- राजस्थान, जयपुर में आयोजित 'लोकरंग' में राज्य की पहचान 'पंडवानी' एवं पंथी नृत्य के दलों की प्रस्तुति दी गई। (अक्टूबर 2006)

- कुल्लू दशहरा में राज्य की पारंपरिक लोक-नृत्य व गीतों पर आधारित कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। (अक्टूबर 2006)

- भवानीपटना, उड़ीसा में आयोजित कालाहांडी उत्सव में गेड़ी नृत्य एवं अन्य पारंपरिक नृत्य-गीत की प्रस्तुति दी गई। (नवम्बर 2006)

- इस वर्ष से प्रख्यात पंथी नर्तक स्व. देवदास बंजारे की स्मृति में लोककला के क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य करने वाले व्यक्ति को 50 हजार रूपये व प्रशस्ती पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया है।

- दक्षिण-मध्य-क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की सदस्यता - संस्कृति विभाग द्वारा पड़ोसी राज्यों से सांस्कृतिक संबंध विकसित करने एवं राज्य के कलाकारों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वर्ष 2005

से दक्षिण-मध्य-क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर की सदस्यता ग्रहण कर कई कार्यक्रम आयोजित किये गये। राज्य शासन ने इसके लिए रू. 2.00 करोड़ की सदस्यता राशि केन्द्र को प्रदान की है। दक्षिण-मध्य-क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के सदस्यता लेने के उपरांत विभिन्न आयोजनों के माध्यम से राज्य की संस्कृति, पड़ोसी राज्यों के सांस्कृतिक गतिविधियों के आदान प्रदान को गति मिली है। चक्रधर समारोह, रायगढ़, दशहरा उत्सव, जगदलपुर, राज्योत्सव रायपुर, में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन तथा राज्य के कलाकारों को राज्य के वाहर प्रस्तुति हेतु केन्द्र के माध्यम से भेजे गए। संस्था द्वारा रायपुर में राष्ट्रीय शिल्प मेला एवं लोक नृत्य महोत्सव का आयोजन माह दिसम्बर में किया गया।

- ओजस्विनी महोत्सव भोपाल में पंडवानी एवं लोक रंग का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। (अक्टूवर 2006)
- ग्वालियर में आयोजित व्यापार मेला में राज्य की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने वाले कार्यक्रम पंथी, पंडवानी एवं लोकमंच का आयोजन किया गया। (जनवरी 2007)

## साहित्य

साहित्यिक आयोजन- राज्य की कला, संस्कृति, परंपरा, वैभवशाली धरोहरों, साहित्यकारों एवं महापुरुषों पर आधारित गोष्ठियो के क्रम में -

- विभाग के अंतर्गत स्थापित पदुमलाल पुन्नालाल वख्शी सृजनपीठ द्वारा आंचलिक साहित्यकारों और जनभाषा, कला एवं संस्कृति पर आधारित आयोजनों में -
- वख्शी जयंती पर जशपुर, कोरवा, भिलाई, जगदलपुर में साहित्य सम्मेलन का आयोजन।
- 28 अगस्त 06 को पंथी शिल्पी स्व. देवदास वंजारे जी के स्मृति दिवस पर विभागीय विचार गोष्ठीय का आयोजन किया गया।

## विभाग के अंतर्गत स्थापित राज्य स्तरीय सम्मान

- **पं. सुन्दरलाल शर्मा सम्मान** (साहित्य/आंचलिक साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान), इस वर्ष पं. दानेश्वर शर्मा, दुर्ग को प्रदान किया गया।
- **चक्रधर सम्मान** (कला/शिल्प कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान), इस वर्ष पं. रामलाल, रायगढ़ को प्रदान किया गया।

- संगीत प्रतिभा उत्सव 2006 सवंधी ब्रोशर का प्रकाशन।
- महंत घासीदास संग्रहालय का अंग्रेजी एवं हिन्दी में ब्रोशर का प्रकाशन।
- बिहनिया के पंचम अंक का प्रकाशन।
- मंदिरों की नगरी 'डीपाडीह' पर आधारित ब्रोशर प्रकाशन।
- गणतंत्र दिवस समारोह 2007 पुस्तिका का प्रकाशन।
- राष्ट्रीय शिल्प मेला एवं लोक नृत्य महोत्सव के संदर्भ में ब्रोशर का प्रकाशन।
- गुरू घासीदास जी की 250 वीं वर्षगांठ पर पत्रिका एवं ब्रोशर का प्रकाशन।
- बाल फिल्म महोत्सव 2006 के संदर्भ में ब्रोशर का प्रकाशन।

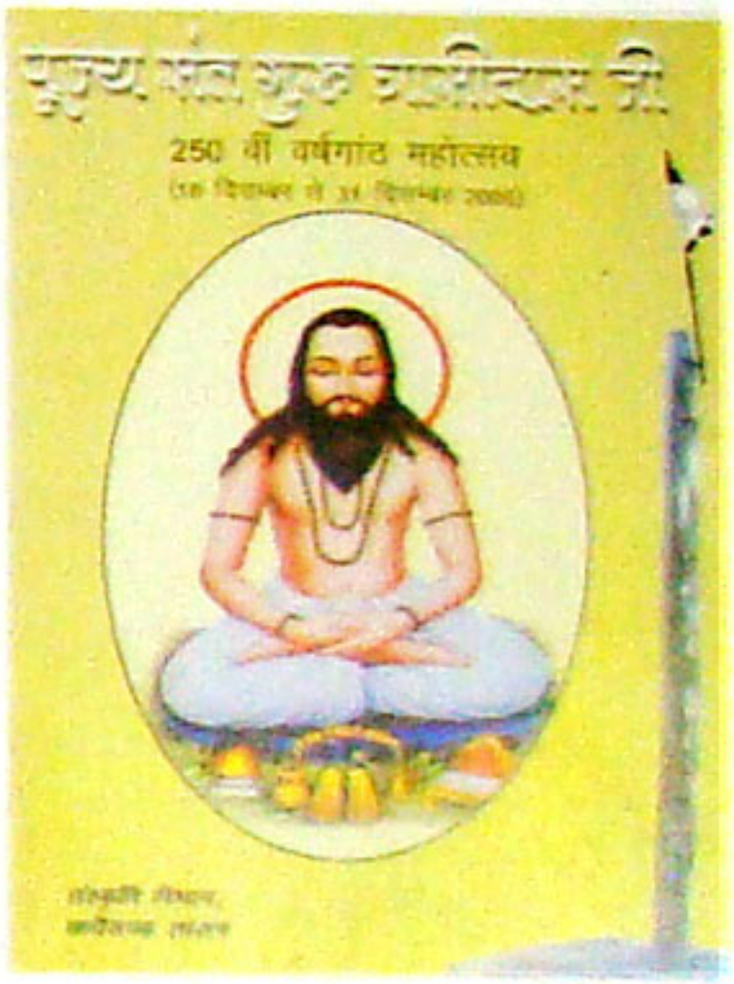


इसके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ के राज्य संरक्षित 58 स्मारकों का विवरण देते हुए हिन्दी एवं अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाली पुस्तिका, छत्तीसगढ़ की शिल्प कला, देवार जाति पर मोनोग्राफ, छत्तीसगढ़ के शैलचित्रों पर आधारित पुस्तिका का प्रकाशन ।

## गोष्ठियां

अंतःसंकायी संवाद तथा स्थानीय समुदायों के सहनिर्देशित पहल से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करने के उद्देश्य से निम्नानुसार आयोजन किए गए -

- बुद्ध जयंती के अवसर पर 'छत्तीसगढ़ में बौद्ध धर्म और कला' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
- गांधी जयंती के अवसर पर विभागीय विचार गोष्ठी का आयोजन।
- गुरू घासीदास जयंती के अवसर पर गुरू घासीदास जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित संगोष्ठी का आयोजन। (दिसम्बर 2006)

- हिन्दी दिवस समारोह हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।
- विश्व धरोहर दिवस पर गोष्ठी का आयोजन।
- संग्रहालय दिवस पर विचार गोष्ठी का आयोजन।

# प्रदर्शनी

सांस्कृतिक परंपराओं के प्रचार-प्रसार तथा मूल स्थान व निर्धारित स्थानों पर प्रदर्शनों की संकल्पना को क्रियान्वित करने हेतु राज्य की परंपराओं तथा सांस्कृतिक व कलात्मक संपदा का निम्नानुसार प्रदर्शन जनजागरूकता के उद्देश्य से किया गया/कराया जा रहा है -

- महावीर जयंती के अवसर पर छत्तीसगढ़ में जैन कला एवं परंपरा से संबंधित प्रदर्शनी का आयोजन जैन सुरिकुशल दादावाडी, रायपुर में किया गया, जिसमें छत्तीसगढ़ की महत्वपूर्ण जैन प्रतिमाओं व स्मारकों के साथ-साथ देश की महत्वपूर्ण जैन प्रतिमाओं एवं पुरातत्वीय महत्व के स्थलों के छायाचित्र प्रदर्शित किए गए।

- बुद्ध जयंती के अवसर पर 'छत्तीसगढ़ में बौद्ध धर्म और कला' विषय पर छायाचित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन।

- स्वाधीनता दिवस 2006 के अवसर पर अंचल के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन।
- प्रदेश के प्रथम शहीद वीर नारायण सिंह का स्केच फोटो प्रदर्शनी का आयोजन।
- गणतंत्र दिवस पर शहीद वीर नारायण सिंह एवं अन्य शहीदों की छायाचित्र प्रदर्शनी।
- छत्तीसगढ़ में भगवान रामचन्द्र जी के वन गमन मार्ग पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
- विश्वधरोहर दिवस पर छत्तीसगढ़ के राज्यस्मारक/धरोहर पर आधारित प्रदर्शनी।
- गुरू घासीदास जयंती के अवसर पर गुरू घासीदास जी से संबंधित स्थल एवं रावटियों पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन। (दिसम्बर 2006)

- दाऊ मंदराजी सम्मान (लोक कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान), इस वर्ष श्री गोविंद राम निर्मलकर, राजनांदगांव को प्रदान किया गया।
- छत्तीसगढ़ अप्रवासी भारतीय सम्मान (विदेश में रहकर देश व राज्य का प्रोत्साहन करने हेतु अंतरराष्ट्रीय सम्मान) इस वर्ष श्री देवेन्द्रनारायण शुक्ल, यू.एस.ए. को प्रदान किया गया।
- स्व. देवदास बंजारे सम्मान - भरथरी गायन हेतु श्रीमती सुरूज बाई खांडे को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त अन्य विभागों द्वारा दिए जाने वाले सम्मानों के सम्मान समारोह का समन्वय एवं अलंकरण समारोह संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित।

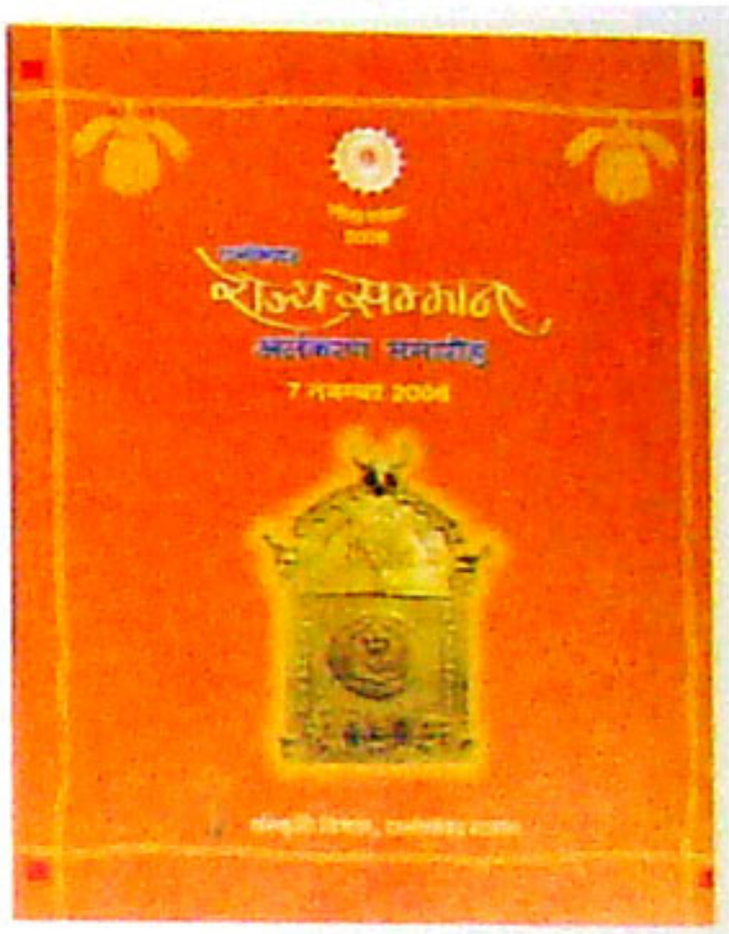


## अनुदान एवं सहायता

अस्तित्वमान सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाली संस्थाओं को बढ़ावा, शारीरिक तथा मानसिक चुनौतियों से जूझते लोगों को प्रोत्साहन तथा सुरक्षित जीवन-यापन के लिए अर्थाभावग्रस्त संस्कृति-कर्मियों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए विभागीय पहल कर, पूर्व प्रकरणों में कार्यवाही तथा नए प्रकरण तैयार कर, सहायता के लिए निम्नानुसार कार्य किए गए -

- वर्ष के दौरान 38 अर्थाभावग्रस्त साहित्यकारों/कलाकारों को जिला पंचायतों के माध्यम से 700/- प्रतिमाह की दर से मासिक सहायता (पेंशन) स्वीकृत किया गया है।
- विभाग द्वारा कलाकार कल्याण कोष से भी 23 विभिन्न जरूरतमंद कलाकारो/ साहित्यकारों को रू. 5,000 के मान से वर्ष 2006-07 के दौरान राशि स्वीकृत की गई है।
- राज्य की संस्कृति, कला से जुड़ी 75 विभिन्न संस्थाओं/व्यक्तियों को विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों, कला के विकास हेतु अनुदान दिया गया।
- कलावीथिका के विकास से सबंधित 4 संस्थाओं/व्यक्तियों को अनुदान दिया गया।
- साहित्यिक गोष्ठियों व साहित्य एवं अन्य सामाजिक कार्यों से जुड़े अन्य आयोजनों हेतु 13 संस्थाओं/व्यक्तियों को तथा साहित्य एवं कला से जुड़े प्रकाशनों हेतु 8 संस्था/ व्यक्तियों को अनुदान दिया गया।
- सांस्कृतिक/साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए छत्तीसगढ़ी लोककला समिति, गुण्डरदेही, रावत नाच महोत्सव समिति बिलासपुर, बिलासा कलामंच बिलासपुर, दाऊ मंदरा जी महोत्सव राजनांदगांव, लोकमया छत्तीसगढ़ लोककला मंच कुम्हारी, सूत्र समाज संती संस्था दुर्ग,

- श्रीराम जानकी प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव रायपुर, छ.ग.प्रदेश यादव महासभा को संगोष्ठी आयोजन छत्तीसगढ़ी सिन्धी साहित्यक संस्था, छत्तीसगढ़ी साहित्य समिति रायपुर, हस्ताक्षर साहित्य समिति दल्लीराजहरा, शरद जोशी स्मृति संगीत समारोह का आयोजन, स्व.पी.डी. आशिर्वादन जी की पहली पुण्यतिथि पर नृत्यांजलि, नाटक प्रशिक्षण तथा मराठी एवं हिन्दी नाटकों के मंचन, शहीद चन्द्रशेखर आजाद के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर सांस्कृतिक आयोजन, छत्तीसगढ़ लोक संस्कृति अनुसंधान संस्थान द्वारा हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. जगमोहन सिंह की 150 वीं जयंती समारोह, स्व.पं. विष्णु कृष्ण जोशी की स्मृति में संगीत कार्यक्रम के आयोजन, राष्ट्र प्रेरक पं.पू. गोलवलकर जी के जन्म शताब्दी वर्ष पर आयोजित एकल नाट्य, सदगुरू कबीर सदभावना यात्रा, स्व. झाडूराम देवांगन जी के स्मृति में पंडवानी कलाकारों को सम्मानित किया गया साथ ही साहित्यिक गतिविधियों के क्रम में "मुझे नहीं करना है" अभिनंदन के प्रकाशन, राम और रामकृष्ण महाग्रंथ, छत्तीसगढ़ के पारंपरिक खेल पुस्तक, छत्तीसगढ़ी की प्राचीन देवी प्रतिमाएं ग्रंथ, दुर्लभ अनुदित ग्रंथ एवं छत्तीसगढ़ी का लोक संगीत पाण्डुलिपि के लिए अनुदान प्रदान किया गया तथा पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ, भिलाई के लिए पोषण अनुदान प्रदान का उत्प्रेरक की भूमिका का निर्वाहन किया गया।

## अभिलेखन

स्थानीय समुदायों की अवाध सांस्कृतिक परंपराओं की पहचान, दस्तावेजीकरण तथा गैर-अभिलेखीय परंपराओं को प्रोत्साहित करने हेतु -

- छत्तीसगढ़ की पारंपरिक गायन, नृत्य और वादन के संवाहक देवारों के लुप्तप्राय वाद्य रुंझू तथा ढुंगरू का अभिलेखन किया गया।

## प्रकाशन

सांस्कृतिक परंपराओं की प्रस्तुति एवं उनका प्रचार-प्रसार, सांस्कृतिक गतिविधियों की निरंतरता तथा जीवन्त प्रवाह मानकर विभिन्न प्रकाशन किए गए है -

- राज्योत्सव 2006 के सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं राज्य दिवस, नई दिल्ली के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के ब्रोशर का प्रकाशन।

- राज्य अलंकरण दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ राज्य प्रेरक विभूतियां व सम्मान ग्रहिताओं संबंधी पुस्तिका/ब्रोशर का प्रकाशन।

- राज्योत्सव 2006 सांस्कृतिक संध्या, छत्तीसगढ़ की कलात्मक परंपरा छत्तीसगढ़ के पारंपरिक व्यजंन खाई-खजेना पर आधारित ब्रोशर का प्रकाशन।

- स्वतंत्रता दिवस 2006, को आयोजित सांस्कृतिक संध्या संबंधी

- राजीवलोचन महोत्सव 2006 के अवसर पर पंचक्रोशी यात्रा एवं शिल्पकारों की नजर में राजिम पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन।

## लोक शिल्पियों की कार्यशाला

- 'आकार 2006' प्रशिक्षण शिविर के अंतर्गत मृदा शिल्प, ढोकरा शिल्प, मधुवनी चित्रकला, फड़ चित्रकला, जरदोजी कला, पट्ट चित्रकला, काष्ठ शिल्प, भित्ति चित्रकला के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिल्प गुरूओं द्वारा 550 से अधिक प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। आकार 2006 का आयोजन रायपुर के साथ-साथ बिलासपुर में भी आयोजित किया गया।

- साथ ही छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध लोक-गाथा पंडवानी गायन के प्रति नयी पीढ़ी को आकर्षित करने व इस विधा को आत्मसाध करने के उद्देश्य से पद्मभूषण तीजनवाई द्वारा बिलासपुर आकार 2006 में पंडवानी प्रशिक्षण दिया गया तथा नाट्य प्रशिक्षण शिविर रायपुर में भरत नाट्यम का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

## कला-वीथिका

लोक-प्रस्तुतियों की आवश्यकता पूर्ति के लिए महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर में राज्य की समृद्ध कला परम्परा और रंग-संसार की इन्द्रधनुषी छटा को सतत् प्रदर्शन करने हेतु कला-विथिका का निर्माण कराया गया है। आधुनिक रंग-सुविधाओं से पूर्ण इस कला-विथिका में कलाकारों को अपनी कला प्रदर्शन के नियमित प्रस्तुतियों का अवसर प्राप्त होगा।

## पुरातत्व

**पुरातत्वीय स्थलों का संरक्षण एवं विकास** - विभाग द्वारा राज्य में फैली पुरासम्पदा के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में पहल करते हुए महत्वपूर्ण संरक्षित पुरातत्वीय स्मारकों के परिसर का उन्नयन एवं विकास कार्य तथा स्मारकों को पर्यटन के अनुरूप विकसित करने का कार्य प्रारंभ किया गया। इसके अंतर्गत अनुरक्षण कार्य, मेला-उत्सव-प्रदर्शनी, फोटोग्राफी तथा माडलिंग के तहत

लक्ष्मणेश्वर मंदिर खरौद

प्रतिकृतियों का निर्माण एवं प्रकाशन कार्य करवाया गया। पुरातत्व से संबंधित संगोष्ठियां, मेला-उत्सव प्रदर्शनी एवं राज्य भर में फैले 58 संरक्षित स्मारकों का अनुरक्षण एवं रासायनिक संरक्षण सम्पन्न किए गये हैं।

- **अनुरक्षण कार्य** - इस वित्तीय वर्ष में पुरातत्वीय स्मारक मावली माता मन्दिर तरपोंगा, शिवमंदिर गिरोद, चितावरी देवी मंदिर धोवनी एवं लक्ष्मणेश्वर मंदिर खरौद में अनुरक्षण एवं विकास कार्य कराये गये तथा लक्ष्मणेश्वर मंदिर खरौद, जिला विलासपुर में अनुरक्षण कार्य प्रस्तावित है।

- **रासायनिक संरक्षण** - पुरातत्वीय स्मारक मंडवा महल जिला कवर्धा, शिव मंदिर सहसपुर में रासायनिक सफाई कार्य किए गए। रायपुर संग्रहालय परिसर के पाषाण स्तंभों एवं पुरावशेषों का रसायनिक उपचार कार्य कराये गये।

- **सर्वेक्षण** - जिला विलासपुर की पेन्ड्रारोड, कोटा, तखतपुर, विल्हा, मुंगेली एवं मस्तूरी, तहसीलों का पुरातत्वीय सर्वेक्षण कार्य किया गया एवं जिला कबीरधाम (कवर्धा) की कवर्धा एवं सहसपुर-लोहारा तहसीलों का ग्रामवार पुरातत्वीय सर्वेक्षण किया गया।

महानदी अपर वेली, शिवनाथ नदीघाटी एवम् खारून नदीघाटी का पुरातत्वीय सर्वेक्षण कार्य प्रस्तावित है।

**शैलचित्र सर्वेक्षण कार्य (रॉक शेल्टर सर्वे)** - रायगढ़ जिले की सारंगढ़ तहसील स्थित शैलाश्रयों का पुरातत्वीय सर्वेक्षण किया गया।

रॉक शेल्टर

## प्राचीन नगरी सिरपुर उत्खनन -

राष्ट्रीय स्तर के पुरातत्वीय स्थल सिरपुर के समग्र विकास के लिए टास्क फोर्स का गठन किया गया एवं योजना तैयार कर विभिन्न विभागों के समन्वय से इस महत्वपूर्ण पुरातत्वीय धरोहर को विश्वस्तरीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने हेतु कार्य करवाये जा रहे हैं। संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा विख्यात पुरातत्वविद्

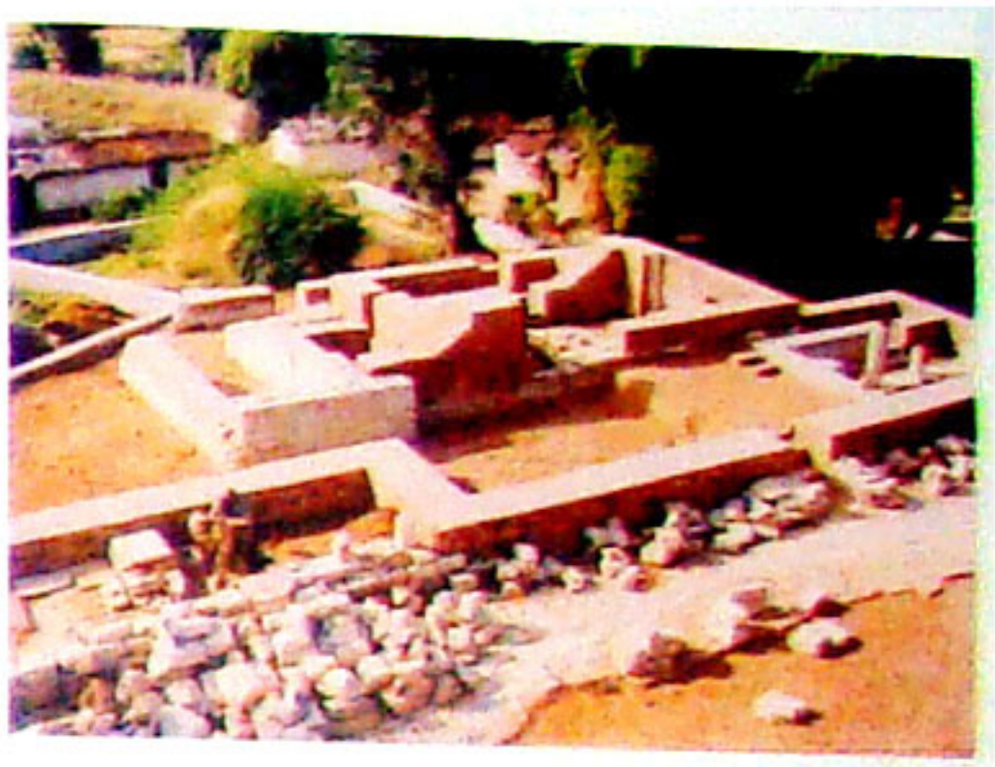

डॉ. ए.के. शर्मा के मार्गदर्शन में सिरपुर में सुरंग टीला के नाम से ज्ञात परिसर में वृहतकाय ध्वस्त टीला एवं संलग्न अन्य दो टीलों में उत्खनन कार्य करवाये गये जिसमें प्रस्तर खंडों से निर्मित विशाल मंदिर संरचना प्रकाश में आया है जो छत्तीसगढ़ के प्रस्तर निर्मित स्मारकों में सबसे बड़ा है। इसी परिसर में दो गर्भगृहों से युक्त ईंटों से निर्मित विशाल आकार का भग्न संरचना भी अनावृत्त हुआ है। जहां से अत्यन्त दुर्लभ सोलह कोणों से युक्त धारालिंग और सोलह कोणीय योनिपीठ प्राप्त हुआ है। परिसर में एक अन्य आवासीय स्मारक की संरचना को प्रकाश में लाया गया है। प्राप्त अवशेषों का अनुरक्षण एवं उत्खनन स्थल का संरक्षण कार्य किया जा रहा है। सिरपुर उत्खनन से प्राप्त प्रतिमाओं तथा पुरावशेषों के प्रदर्शन हेतु संग्रहालय निर्माण के लिए स्थल का चयन किया जा रहा है।

वर्ष 2007 में भारतीय पुरातत्वीय सर्वेक्षण, नई दिल्ली के द्वारा छत्तीसगढ़ के संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, को सिरपुर में उत्खनन हेतु अनुज्ञा प्राप्त हुई है। तद्नुसार सिरपुर में उत्खनन कार्य जारी है।

## संग्रहालय

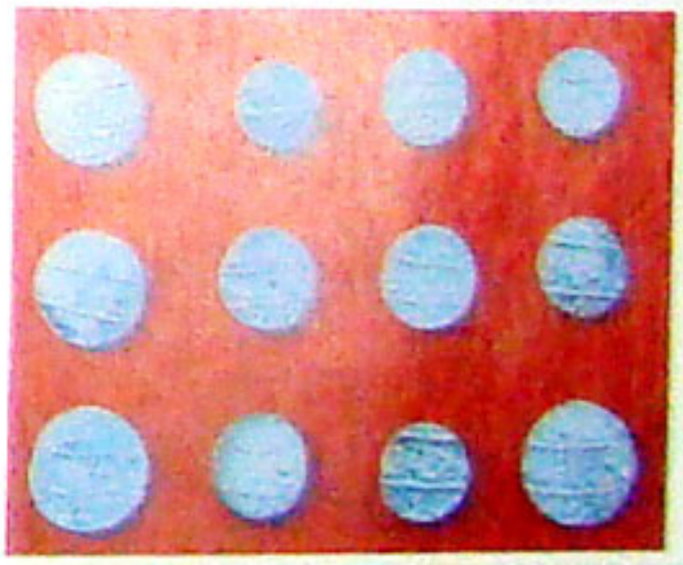

- महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, राज्य स्तरीय संग्रहालय है। संग्रहालय के प्रवेश दीर्घा, सिरपुर दीर्घा, प्रतिमा दीर्घा एवं शिलालेख दीर्घा में प्रदर्शन कार्य का उन्नयन करते हुए आधुनिकीकरण किया गया है एवं सभागार निर्माण की कार्यवाही प्रगति पर हैं।

- पुरातत्वीय सम्पदा के प्रति जनजागरूकता की दृष्टि तथा जनसामान्य की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिला पुरातत्व संघों का गठन जिला स्तर पर स्थापित करने की कार्यवाही की गई है। ग्राम स्तर पर ग्राम धरोहर संघ के गठन के साथ-साथ पंचायतों के माध्यम से पुरावशेषों, स्मारकों की सुरक्षा के लिए प्रयास किए गए हैं।
- राज्य के पुरातत्वीय सुरक्षा के लिए बेहतर प्रबंध महत्वपूर्ण स्मारक स्थलों पर केयर-टेकर रखे गए हैं।
- छत्तीसगढ़ राज्य की पुरासम्पदा के संरक्षण और प्रदर्शन के लिए राजनांदगांव जिलें में भवन निर्माण का कार्य कराया गया है, साथ ही साथ कोरिया, जाजंगीर-चांपा, बिलासपुर आदि जिली में संग्रहालयों के विकास के लिए जिला पुरातत्व संघों के विकास के लिए जिला कलेक्टरों को

- धन राशि उपलब्ध कराई गयी है। जिला पुरातत्व संग्रहालय, जगदलपुर के भवन के निर्माण के लिए धनराशि उपलब्ध गया हैं।

- रायपुर एवं राज्य के अन्य प्रमुख नगरों- अंबिकापुर, जगदलपुर एवं बिलासपुर में पुरातत्वीय संग्रहालय के स्थापना और सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना है। इन केन्द्रों में क्षेत्र की लोककला का अभिलेखन, प्रदर्शन आंचलिक साहित्य पुस्तकालय तथा लोक गीतों का संग्रह और जनजातीय परंपराओं पर आधारित तथा लोक गीतों का संग्रह और जनजातीय परंपराओं पर आधारित संग्रहालय बनाया जाएगा, साथ ही इन केन्द्रों के माध्यम से सांस्कृतिक गतिविधियाँ आयोजित की जाएगी।

## संगीत संग्रहालय की स्थापना

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर में संगीत संग्रहालय की स्थापना की गई एवं इसके लिए आडियो-कैसेट, सीडी, वीडियो कैसेट, एल.पी. रिकार्ड्स का संग्रहण किया गया।

## महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय

संस्कृति विभाग के अंतर्गत संचालित शहीद स्मारक भवन में स्थापित महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय को राज्य केन्द्रीय ग्रंथालय का दर्जा दिया गया है। इस लाइब्रेरी को ई-लाईब्रेरी के रूप में भी विकसित किया जा रहा है। इस ग्रंथालय में इतिहास, पुरातत्व, नृत्तव शास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी साहित्य, पत्रकारिता, पर्यटन एवं कम्प्यूटर आदि के अतिरिक्त हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत साहित्य से संबंधित ग्रंथ तथा गजेटियर उपलब्ध हैं।

## माडलिंग -

- विभागीय गतिविधियां के अंतर्गत राज्य के महत्वपूर्ण प्राचीन कलात्मक प्रतिमाओं की प्रतिकृति तैयार कर सामान्य मूल्य में जनता को उपलब्ध कराने तथा प्रचार-प्रचार की दृष्टि से पुरातत्वीयमहत्व की सुंदर प्रतिमाओं के प्लास्टर कास्ट तैयार किये जाते हैं। इस वर्ष डीपाडीह जिला-सरगुजा से प्राप्त नृत्यरत गण एवं योद्धा गणेश की प्रतिमाओं एवं आमलक कलाकृति का प्लास्टरकास्ट सांचा तैयार कर प्रतिकृतियों का निर्माण किया गया है। विभाग में उपलब्ध प्लास्टर कास्ट प्रतिमाओं तथा प्रकाशनों के विक्रय हेतु संग्रहालय परिसर में विक्रय केन्द्र का निर्माण किया गया है।

# श्री राजीवलोचन कुंभ 2007 का आयोजन

राज्य की धरोहर, कला, संस्कृति एवं परंपराओं के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से श्री राजीवलोचन कुंभ 2007 का आयोजन किया गया है। मुख्य आयोजन 2 फरवरी से 16 फरवरी 2007 तक राजिम में सम्पन्न हुआ।इस अवसर पर देश के कोने-कोने से साधु-संतों का समागम राजिम में आयोजित है एवं संतों की सहमति से इसे कुंभ समान आयोजन स्थल का सम्मान प्राप्त हुआ

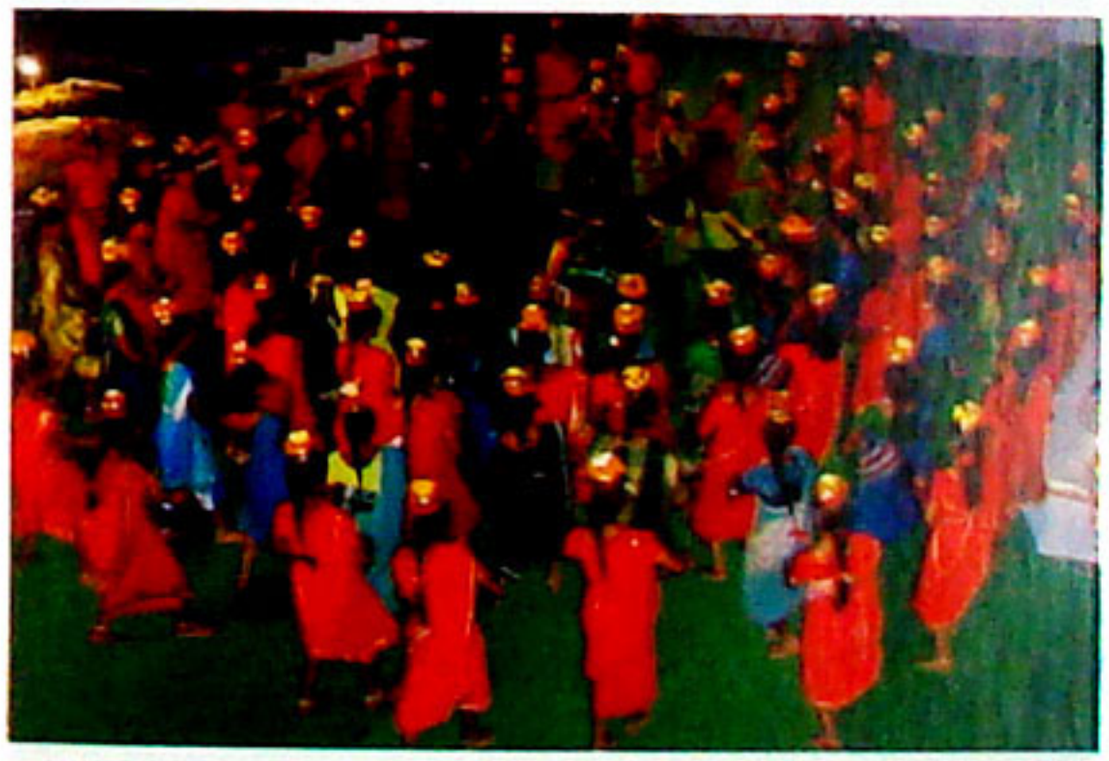

है। इस प्रकार के आयोजन से छत्तीसगढ़ का प्रयाग कहे जाने वाले 'राजिम' के साथ-साथ राज्य की धरोहर, संस्कृति, परंपरा एवं कला के प्रचार-प्रसार को एक नया आयाम तो मिलेगा ही, साथ ही पर्यटन की दृष्टि से भी शासन का यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। इस वर्ष मुख्य मंच, राजिम में छत्तीसगढ़ महिमा एवं श्री राजीवलोचन वंदना पर आधारित लोक नृत्य एवं गीत, राज्य के प्रमुख पंडवानी, पंथी, चंदैनी, नाचा आदि के ख्याति प्राप्त लोक कलाकारों की रंगारंग प्रस्तुति एवं ध्वनि व प्रकाश पर आधारित प्रस्तुति के साथ-साथ पंचक्रोशी क्षेत्रों में आयोजन किया गया । नवापारा में छत्तीसगढ़ के लोक करतबों की द्वि-दिवसीय रोमांचक प्रस्तुतियों के साथ ही लोमश ऋषि आश्रम में वृंदावन की प्रसिद्ध रासलीला की भक्तिमय एवं संगीतमय प्रस्तुति एवं प्रवचन का आयोजन किया गया। साथ ही इस अवसर पर कुंभ तट पर विभागीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। पौष पुर्णीमा से माघ पुर्णीमा तक एक माह का कल्पवास का आयोजन भी किया गया।

# संस्कृति एवं पुरातत्व

(संस्कृति पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय बजट प्रावधान की जानकारी)

वित्तीय वर्ष 2006-07

| क. | योजना का नाम | आयोजनेत्तर | आयोजना | योग |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| लेखा शीर्ष - 2205 | | (आंकड़े लाख रूपयों में ) | | |
| 1 | 103 - पुरातत्व | 124.62 | 123.65 | 248.27 |
| 2 | 104 - अभिलेखागार | 12.73 | 0 | 12.73 |
| 3 | 105 - सार्वजनिक पुस्तकालय | 0 | 36.00 | 36.00 |
| 4 | 107 - संग्रहालय + प्रथम, द्वितीय अनुपूरक | 274.61 | 0 | 274.61 |
| | योग | 411.96 | 159.65 | 571.61 |
| लेखा शीर्ष - 2202 -2205-3454 | | (आंकड़े लाख रूपयों में ) | | |
| 1 | 2202 सामान्य शिक्षा<br>102 आधुनिक भारतीय भाषाओं और साहित्य का संवर्धन | 24.97 | 0 | 24.97 |
| 2 | 2205 कला और संस्कृति<br>101 ललित कलाओं की शिक्षा | 2.25 | 100.00 | 102.25 |
| 3 | 102 कलाओं और संस्कृति का संवर्धन | 160.00 | 0 | 160.00 |
| 4 | 800 अन्य व्यय + द्वितीय अनुपूरक | 1.00 | 237.50 | 238.50 |
| 5 | 3454 जनगणना सर्वेक्षण एवं सांख्यिकी<br>110 गजेटियर और सांख्यिकी विवरण | 0 | 8.47 | 8.47 |
| | योग | 188.22 | 345.97 | 534.19 |
| | योग मांग संख्या 26 | 600.18 | 505.62 | 1105.80 |

मांग संख्या 41-आदिवासी उप योजना, 2205 - कला एवं संस्कृति

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 107 संग्रहालय | 0 | 200.00 | 200.00 |

वित्तीय वर्ष 2006-07 में प्रथम एवं द्वितीय अनुपूरक से प्राप्त रू. 307.00 लाख की जानकारी-

| लेखा शीर्ष - 2205 | | (आंकड़े लाख रूपयों में ) | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 107 - संग्रहालय | 157.00 | 0 | 157.00 |
| 2 | 800 - अन्य व्यय | 0 | 100.00 | 100.00 |
| 3 | आदिवासी उपयोजना 107-संग्रहालय | 0 | 50.00 | 50.00 |
| | योग | 157.00 | 150.00 | 307.00 |

# संस्कृति एवं पुरातत्व

## संचालनालय में कार्यरत अमले का विवरण

| क्र. | पद नाम | वेतनमान | शासन द्वारा स्वीकृत पद | भरे पद | रिक्त पद |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 1 | आयुक्त/संचालक - प्रथम श्रेणी | अखिल भारतीय सेवा | 1 | 1 | - |
| 2 | संयुक्त संचालक-प्रथम श्रेणी | 12000-16500 | 2 | 2 | |
| 3 | उपसंचालक-प्रथम श्रेणी | 10000-15200 | 6 | 6 | - |
| 4 | सहा. संचालक-द्वितीय श्रेणी | 8000-13500 | 1 | - | 1 |
| 5 | सहा. संचालक-द्वितीय श्रेणी | 6500-10500 | 1 | 1 | - |
| 6 | प्रकाशन अधिकारी | 8000-13500 | 1 | 1 | - |
| 7 | मुद्राशास्त्री | 8000-13500 | 1 | - | 1 |
| 8 | पुरातत्ववेत्ता | 8000-13500 | 2 | 1 | 1 |
| 9 | ग्रंथपाल | 8000-13500 | 1 | 1 | - |
| 10 | सहायक यंत्री | 8000-13500 | 1 | - | 1 |
| 11 | मुख्य रसायनज्ञ | 8000-13500 | 1 | - | 1 |
| 12 | पुरातत्वीय अधिकारी | 8000-13500 | 1 | - | 1 |
| 13 | पुरालेख अधिकारी | 8000-13500 | 1 | - | 1 |
| 14 | पुरालेखवेत्ता | 8000-13500 | 1 | - | 1 |
| 15 | संग्रहाध्यक्ष | 8000-13500 | 3 | - | 3 |
| 16 | लेखाधिकारी | 8000-13500 | 1 | | 1 |
| 17 | संरक्षण अधिकारी | 6500-10500 | 1 | - | 1 |
| 18 | सहा.पुरालेख अधि.तृतीय श्रेणी | 5500-9000 | 1 | 1 | - |
| 19 | अधीक्षक | 5500-9000 | 1 | | 1 |
| 20 | अनुदेशक | 5500-9000 | 2 | 2 | - |
| 21 | कनिष्ठ लेखाधिकारी | 5000-8000 | 1 | - | 1 |
| 22 | सहायक अधीक्षक | 5000-8000 | 1 | | 1 |
| 23 | सहायक ग्रंथपाल | 5000-8000 | 2 | 2 | - |
| 24 | सहायक प्रोग्रामर | 5000-8000 | 1 | - | 1 |
| 25 | उपयंत्री | 5000-8000 | 3 | 1 | 2 |
| 26 | मान चित्रकार | 5000-8000 | 2 | 1 | 1 |
| 27 | कलाकार | 5000-8000 | 2 | 2 | - |
| 28 | रसायनज्ञ | 5000-8000 | 2 | 2 | - |
| 29 | शोध सहायक | 5000-8000 | 2 | 1 | 1 |
| 30 | सहायक वर्ग 1 | 4500-7000 | 1 | - | 1 |
| 31 | तकनीकी सहायक | 4500-7000 | 2 | 2 | - |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 32 | सहायक पुरालेखपाल | 4500-7000 | 1 | - | 1 |
| 33 | सहायक कलाकार | 4500-7000 | 2 | 1 | 1 |
| 34 | सहायक रसायनज्ञ | 4500-7000 | 2 | 2 | - |
| 35 | उत्खनन सहायक | 4500-7000 | 3 | - | 3 |
| 36 | अनुवादक | 4500-7000 | 2 | 1 | 1 |
| 37 | सहायक वर्ग - 2 | 4000-6000 | 12 | 10 | 2 |
| 38 | स्टेनो ग्राफर | 4000-6000 | 3 | 1 | 2 |
| 39 | विडीयोग्राफर/छायाचित्रकार | 4000-6000 | 1 | 1 | - |
| 40 | पर्यवेक्षक | 4000-6000 | 1 | - | 1 |
| 41 | सर्वेयर | 4000-6000 | 3 | 2 | 1 |
| 42 | डाटा एन्ट्री ऑपरेटर | 3500-5200 | 8 | 5 | 3 |
| 43 | मार्ग दर्शक/गाईड | 3500-5200 | 3 | 3 | - |
| 44 | स्टेनों टायपिस्ट | 3050-4590 | 5 | 2 | 3 |
| 45 | सहायक ग्रेड-3 | 3050-4590 | 17 | 11 | 6 |
| 46 | वाहन चालक | 3050-4590 | 3 | 1 | 2 |
| 47 | मोल्डर/सेल्समेन | 3050-4590 | 2 | 1 | 1 |
| 48 | वाईन्डर | 3050-4590 | 1 | - | 1 |
| 49 | भृत्य | 2550-3200 | 25 | 25 | - |
| 50 | चौकीदार | 2550-3200 | 3 | 3 | - |
| 51 | चौंकीदार | जिलाध्यक्ष दर | 1 | 1 | - |
| 52 | फर्राश (अंशकालीन) | जिलाध्यक्ष दर | 1 | 1 | - |
| 53 | केयरटेकर | जिलाध्यक्ष दर | 12 | 12 | - |
| | योग | | 160 | 110 | 50 |

संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ शासन